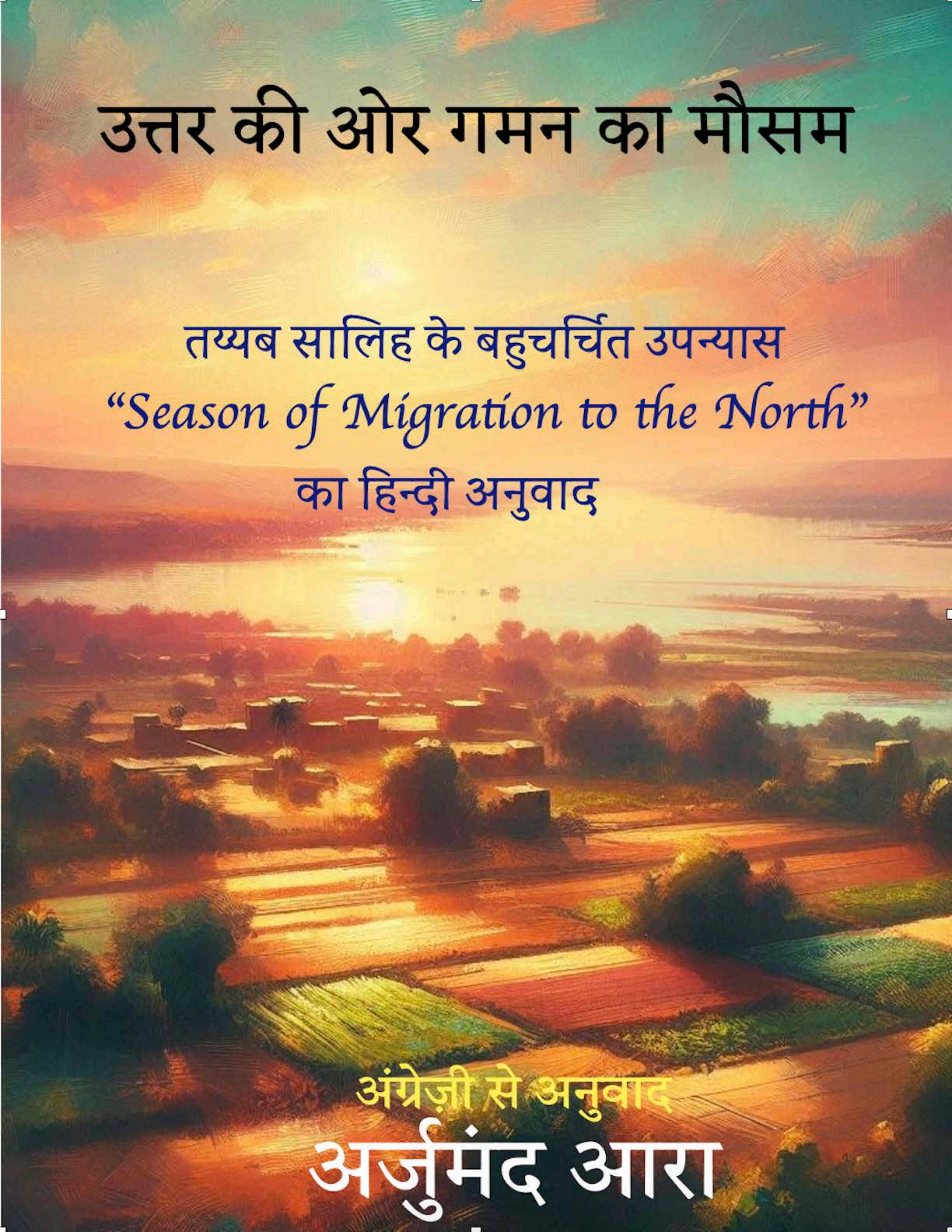

उत्तर की ओर गमन का मौसम

तय्यब सालिह के बहुचर्चित उपन्यास

“Season of Migration to the North”

का हिन्दी अनुवाद

अंग्रेज़ी से अनुवाद

अर्जुमंद आरा

उत्तर की ओर गमन का मौसम

(सूडानी उपन्यास)

तय्यब सालिह

अंग्रेज़ी से अनुवाद

अर्जुमंद आरा

परिचय

तय्यब सालिह (जो अपना नाम अरबी में अत्तय्यब सालिह लिखते थे) एक मशहूर सूडानी लेखक हैं जिनको आधुनिक अरबी उपन्यास लेखन में एक प्रबुद्ध लेखक माना जाता है। वे 1929 में सूडान के उत्तरी क्षेत्र में नील नदी के किनारे बसे एक गाँव में छोटे किसानों और मज़हबी उस्तादों के घराने में पैदा हुए। ख़रतूम यूनिवर्सिटी से तालीम हासिल करने के बाद उन्होंने उच्च शिक्षा के लिए लंदन यूनिवर्सिटी में दाख़िला लिया। लंदन आने से पहले उन्होंने कुछ समय एक स्कूल में पढ़ाया लेकिन इसके बाद उनका सारा जीवन ब्रॉडकास्टर के तौर पर बीता। पहले वे बीबीसी की अरबी सर्विस से वाबस्ता रहे और बाद में क़तर के सूचना मंत्रालय के डायरेक्टर जनरल बन गए। लंदन में प्रवास के दौरान उन्होंने वहां से छपने वाली एक अरबी पत्रिका *अल-मुजल्ला* के लिए दस वर्ष तक साप्ताहिक कॉलम लिखा जो साहित्यिक विषयों पर होता था। अपनी ज़िंदगी के दस साल उन्होंने यूनेस्को से वाबस्ता रह कर पैरिस में गुज़ारे। 2009 में अस्सी वर्ष की उम्र में लंदन में उनका निधन हुआ।

तय्यब सालिह का लेखन सूडानी देहात के सामूहिक जीवन और संस्कृति के अनुभवों पर आधारित है और वहां के बाशिंदों की मनोदशा का गहरा विश्लेषण करता और उनके परस्पर पेचीदा रिश्तों का हाल सुनाता है। पश्चिमी देशों की संस्कृति के साथ

टकराव और तालमेल के रिश्तों की जटिलताएं भी उनका प्रिय विषय हैं. उनकी मुख्य कृतियाँ हैं: *नख़्ला अलल-जदवल* (नहर के किनारे खजूर का पेड़ 1953), *दूमा वद हामिद* (वद हामिद का दूमा वृक्ष 1960), हुफ़्ना समर (मुट्ठी भर खजूरें, 1964), उर्स-उज़-ज़ैन (उर्स की शादी, 1966), *मौसिम-उल-हिज्रा इलश-शमाल* (उत्तर की ओर गमन का मौसम, 1966), बन्दरशाह-I ज़ुवल-बैत (1971), बन्दरशाह-II मरयूद. समस्त रचनाओं पर आधारित संकलन 1984 में प्रकाशित हुआ. इनकी अधिकतर रचनाओं का अंग्रेज़ी अनुवाद डेनिस जॉनसन डेवीज़ (Danys Johnson-Davies) ने किया है।

तय्यब सालिह का शाहकार उपन्यास *मौसिम-उल-हिज्रा इलश-शमाल* मूल अरबी भाषा में 1966 में शाय हुआ था और डेनिस जॉनसन डेवीज़ द्वारा इसका अंग्रेज़ी अनुवाद *सीज़न ऑफ़ माइग्रेशन टू द नॉर्थ* के शीर्षक से 1969 में शाय हुआ। यह उत्तर-उपनिवेशी दौर में अरब-अफ़्रीक़ी इलाक़ों का शाहकार उपन्यास माना जाता है, और इसमें पश्चिम के साथ अरब अफ़्रीकी रिश्तों के द्वन्द और जटिलता का प्रतीकात्मक विवरण मिलता है। दमिश्क़ की अरब लिटरेरी अकादेमी ने इसे अरबी भाषा में बीसवीं शताब्दी का बेहतरीन उपन्यास क़रार दिया और यह दुनिया भर के कई विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में शामिल है।

उपन्यास का उर्दू-हिंदी अनुवाद अंग्रेज़ी इबारत पर बुनियाद रखता है लेकिन साथ में मूल अरबी टेक्स्ट को भी सामने रखा गया है और जुमला-ब-जुमला इबारत मिलाई गई है। चुनांचे कहा जा सकता है कि उर्दू-हिंदी तर्जुमे में से ऐसी संभावित त्रुटियाँ दूर कर दी गई हैं जो केवल अंग्रेज़ी अनुवाद पर आश्रित होने से जन्म ले सकती थीं।

<u>शीर्षक के बारे में स्पष्टीकरण:</u>

यह उपन्यास सूडान, मिस्र और इंग्लैंड की पृष्ठभूमि में लिखा गया है। भौगोलिक एतबार से इंग्लैंड सूडान और मिस्र के उत्तर में स्थित है, अत: यहाँ के लोग इंग्लैंड और यूरोप को उसी तरह उत्तर कहते हैं जैसे हम भारत में पश्चिम कहते हैं.

अर्जुमंद आरा

प्रोफ़ेसर उर्दू विभाग

दिल्ली विश्वविद्यालय

1

सज्जनो! बहुत लंबी अनुपस्थिति के बाद मैं अपने लोगों के बीच लौटा हूँ- पूरे सात साल के अन्तराल के बाद, जिसके दौरान में मैं यूरोप में पढ़ रहा था। बहुत कुछ पढ़ा और बहुत कुछ भूल गया। लेकिन वह एक दूसरी ही कहानी है। महत्वपूर्ण बात यह है कि मैं अपनों से मिलने की तीव्र इच्छा मन में लिए नील के मोड़ पर स्थित इस छोटे से गांव में लौटा हूँ। सात वर्ष तक मैं उनके लिए तड़पता रहा और उन्हें अपने सपनों में देखता रहा। वह क्षण मेरे लिए अहम था जब मैंने वास्तव में ख़ुद को उनके सामने खड़े पाया। मुझे अपने साथ पाकर वे लोग झूम उठे और ग़ुल-ग़पाड़ा मचाने लगे, और ज़रा ही देर में मुझे यूं लगने लगा जैसे मेरे अंदर बर्फ़ का एक टुकड़ा था जो पिघलने लगा है, कोई जमी हुई चीज़ थी जिस पर सूरज चमक उठा है। यह हमारे क़बीले की जीवन से ओत-प्रोत हरारत थी जिसे मैं एक मुद्दत पहले उस देश में खो चुका था "जहां मछलियां ठंड से मर जाती हैं।" मेरे कानों में इनकी अवाज़ें गूंजती थी, मेरी आँखें इनकी छवि देखती थीं। चूँकि इनकी अनुपस्थिति में मैं इनके बारे में अत्यधिक सोचता था इसलिए जिस पल मैंने इनको सामने पाया तो मेरे और इनके बीच धुंध की एक चादर सी तन गई। लेकिन धुंध छंटी, और लौटने के बाद दूसरे दिन अपने कमरे के चिर-परिचित बिस्तर पर मेरी आंख खुली- उस कमरे में जिसकी दीवारें मेरे बचपन और लड़कपन

की छोटी-मोटी घटनाओं की गवाह थीं। मैंने हवाओं के स्वर को ध्यान से सुना। इस स्वर से मैं निश्चय ही भली भांति परिचित था, जो हमारे गांव में चंचल सरगोशी जैसी लगती थी। खजूर के पेड़ों से यह गुज़रती हुई आवाज़ उस समय कितनी बदल जाती है जब मकई के खेतों से गुज़रती है। कोयल की कूक कान में पड़ी, और मैंने खिड़की से परे आंगन में लगे खजूर के पेड़ की ओर देखा और समझ गया कि यहाँ अभी सब कुशल मंगल है। मैंने उसके मज़बूत और सीधे तने को देखा, फिर उसकी जड़ों को जो ज़मीन में गहरी पेवस्त हो गई थीं, और फिर उसकी हरी भरी डालियों को देखा जो उन्मुक्त भाव से झुकी पड़ रही थीं। और मैंने संतोष का सांस लिया। मुझे लगा कि मैं आंधी में उड़ता हुआ कोई तिनका नहीं बल्कि खजूर का पेड़ हूँ, एक ऐसा प्राणी हूँ जिसका एक आधार है, जड़ें हैं, उद्देश्य है।

अम्मी चाय ले आईं। अब्बा, जो नमाज़ और क़ुरआन पढ़ने से फ़ारिग़ हो चुके थे, अम्मी के साथ ही अंदर चले आए। फिर मेरी बहन आई, और भाई भी आ गया, और हम सब बैठ कर चाय पीने के साथ-साथ बातें करने लगे, जैसा कि हम उन दिनों से ही करते आए हैं जबसे मैंने होश संभाला था। हाँ, जीवन मैं सब कुछ भला-भला है, और दुनिया में कोई बदलाव नहीं आया है।

अचानक मुझे याद आया कि जो लोग मेरे स्वागत के लिए आये थे उनमें एक चेहरा ऐसा भी था जिससे मैं परिचित नहीं था। मैं उसके बारे में पूछा और उसका

हुलिया बताया: औसत क़द का आदमी, उम्र कोई पचास साल या कुछ अधिक। बाल घने और सफ़ेदी लिए हुए, दाढ़ी सफ़ा-चट, और मूछें उससे थोड़ी छोटी जितनी गांव के लोग आमतौर पर रखते हैं। एक सुंदर पुरूष।

"वह मुस्तफ़ा था।" अब्बा ने जवाब दिया।

यह मुस्तफ़ा कौन था? क्या हमारे गांव के उन लोगों में से है जो विलायत चले गये थे, और अब लौटने लगे हैं?

अब्बा ने बताया कि मुस्तफ़ा स्थानीय आदमी नहीं बल्कि अजनबी है जो पांच साल पहले यहां आया था। उसने अपने लिए खेत ख़रीदे, घर बनाया और बिन्ते महमूद से शादी की— वह ऐसा व्यक्ति है जो अपने बारे में किसी से बात नहीं करता और जिसके बारे में लोग अधिक नहीं जानते।

पता नहीं किस बात ने मेरी जिज्ञासा को हवा दी थी, लेकिन मुझे यह याद रह गया था कि मेरे आगमन के दिन वह व्यक्ति चुप था। सब लोग मुझसे यूरोप के बारे में पूछ कर रहे थे। क्या वहां लोग हम जैसे हैं या हम से अलग? वहां महंगाई या मंदी? लोग सर्दियों में क्या करते हैं? कहते हैं वहाँ औरतें बेपर्दा रहती हैं और मर्दों के साथ खुलेआम नाचती हैं। वद रईस ने पूछा, "क्या यह सच है कि वहाँ लोग शादी नहीं करते बल्कि आदमी औरत के साथ पाप भरा जीवन बिताते है?"